B.N. College, Bhagalpur

A Constituent unit of Tilka Manjhi Bhagalpur University

Department of History

Topic : Reforms of Napoleon Bonaparte (PPT)

B.A. Part-1

Prepared by : Sri Pinku kumar

Asst. Professor (Dept. of History)

B.N. College Bhagalpur

Contact (whatsApp) no- 7982166260

Email id- kpinku348@gmail.com

नेपोलियन के सुधार

- नेपोलियन बोनापार्ट ने वर्ष 1799 ई. में फ्रांस की सत्ता को अपने हाथों में लिया। उसने अपनी स्थिति सुदृढ़ करने तथा फ्रांस को प्रशासनिक स्थायित्व प्रदान करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में सुधार किया। वस्तुतः नेपोलियन ने डायरेक्टरी के शासन को समाप्त कर सत्ता प्राप्त की थी और फ्रांस की जनता ने उस परिवर्तन को इसलिए स्वीकार किया था क्योंकि वह अराजकता और अव्यवस्था से ऊब चुकी थी। अतः नेपोलियन के लिए सुधार अत्यंत आवश्यक था, जो की निम्न है -

संविधान का निर्माण

- 1799 ई में प्रथम काउंसल बनने के बाद नेपोलियन ने फ्रांस के लिए एक नवीन संविधान का निर्माण किया जो क्रांति युग का चौथा संविधान था। फ्रांस का पहला संविधान 1789 की क्रांति का परिणाम था और क्रांति के दौरान ही फ्रांस में तीन संविधान क्रमशः 1791,1793, और 1795 में बने।
- 1799 में बने चौथे संविधान के द्वारा कार्यपालिका शक्ति तीन काउंसलरों में निहित कर दिया गया। प्रधान काउंसल को अन्य काउंसलरों से अधिक शक्ति प्राप्त थी। राज्य की समस्त शक्तियां प्रथम काउंसल को सौंप दी गयी। संविधान में गणतंत्रात्मक व्यवस्था सिर्फ नाममात्र के लिए कायम रही लेकिन राज्य की संपूर्ण सत्ता नेपोलियन के हाथों में केंद्रित हो गयी।

प्रशासनिक सुधार

- क्रांति काल में क्रांतिकारियों ने वर्ग व्यवस्था को समाप्त कर ही दिया था। परंतु अभी तक उच्च पदों पर नियुक्तियां योग्यता के आधार पर ना होकर धन के आधार पर होती थी। नेपोलियन ने इस प्रथा को समाप्त करके राज्य के प्रशासनिक क्षेत्रों के पदाधिकारियों की नियुक्ति स्वयं करना आरंभ कर दिया।
- नेपोलियन ने शासन व्यवस्था का केंद्रीकरण किया और डिपार्टमेंट्स तथा डिस्ट्रिक्ट की स्थानीय सरकारों को समाप्त कर प्रीफेक्ट तथा सब प्रीफेक्ट की नियुक्ति की। इनकी नियुक्ति तथा गांव और शहरों के सभी मेयरों की नियुक्ति सीधे केंद्रीय सरकार द्वारा की जाने लगी।
- इस प्रकार प्रशासन के क्षेत्र में नेपोलियन ने इन अधिकारियों पर पर्याप्त नियंत्रण रख प्रशासन को चुस्त-दुरुस्त बनाए रखा। इस प्रकार जनता के हृदय में प्रशासन के प्रति विश्वास उत्पन्न होने लगा और वह समझने लगा कि अब उनकी योग्यता, ईमानदारी तथा परिश्रम का फल मिलेगा तथा इसी आधार पर वे भविष्य में उन्नति कर सकेंगे।

आर्थिक सुधार

- फ्रांस की आर्थिक दशा लुई 16वें के काल से ही खराब थी। क्रांति काल में यह आर्थिक दशा और भी ख़राब हो गयी। नेपोलियन ने इस ओर ध्यान दिया तथा इसके तहत उसने सर्वप्रथम कर प्रणाली को सुचारू बनाया। कर वसूलने का कार्य केंद्रीय कर्मचारियों के जिम्मे सौंपा तथा उसकी वसूली सख्ती से की जाने लगी। उसने घूसखोरी, सट्टेबाजी, ठेकेदारी में अनुचित मुनाफे पर रोक लगा दी तथा फ्रांस की जनता पर अनेक अप्रत्यक्ष कर लगा दिया। नेपोलियन ने अपनी साख बनाए रखने के लिए 'बैंक ऑफ फ्रांस' की भी स्थापना की जिससे जनता को अनेक व्यापारिक तथा आर्थिक सुविधाएं प्राप्त हुई।
- नेपोलियन ने कृषि के सुधार पर भी बल दिया और बंजर तथा रेतीले क्षेत्रों को उपजाऊ बनाने की योजना बनायी। व्यापार के विकास के लिए नेपोलियन ने आवागमन के साधनों की तरफ पर्याप्त ध्यान दिया। उन्होंने सड़कें व नहरें बनवाए तथा विभिन्न प्रकार के व्यवसाय की प्रगति के लिए यांत्रिक शिक्षा की व्यवस्था की।
- उन्होंने स्वदेशी वस्तुओं एवं उद्योगों को प्रोत्साहन दिया। बेरोजगारी की समस्या को दूर करने के लिए निर्माण कार्य को प्रोत्साहन दिया। इस प्रकार नेपोलियन ने फ्रांस की अव्यवस्थित आर्थिक दशा को ठीक करके देश को बेरोजगारी, भुखमरी तथा आर्थिक संकट से बचा लिया।

धार्मिक सुधार या चर्च संबंधी सुधार

- नेपोलियन ने फ्रांस की धार्मिक समस्या को भी सुलझाने का प्रयास किया। फ्रांस की बहुसंख्यक जनता कैथोलिक चर्च के प्रभाव में थी। क्रांति के दौरान चर्च की शक्ति को कमजोर कर उसे राज्य के अधीन लाया गया। साथ ही चर्च की संपत्ति का राष्ट्रीयकरण किया गया और पादरियों को राष्ट्र की वफादारी की शपथ लेने को कहा गया। इससे पोप नाराज हुआ और आम जनता को विरोध करने के लिए उकसाया।
- जिससे सरकार और आम जनता के बीच तनाव, फलस्वरूप 1801 ई. में नेपोलियन और पोप के मध्य कॉंनकारडेट संधि हुई जिसके निम्न प्रावधान थे-
- विशपों की नियुक्ति प्रथम काउंसलर के द्वारा होगी लेकिन वे अपने पद पर पोप द्वारा दीक्षित होंगे। विशप पुरोहितों की नियुक्ति करने लगे तथा पुरोहितों को राष्ट्र के प्रति वफादारी की शपथ लेनी पड़ी।
- रोमन कैथोलिक धर्म को राजकीय धर्म के रूप में स्वीकार किया गया।
- इस प्रकार फ्रांस में नेपोलियन ने राजनीतिक उद्देश्यों से परिचालित होकर पोप से संधि की और क्रांतिकालीन अव्यवस्था को समाप्त कर चर्च को राज्य का सहभागी बनाया।

शैक्षिक सुधार

- नेपोलियन ने प्रजातंत्र में शिक्षा के महत्व को समझा और राज्य सत्ता प्राप्त करते ही शिक्षा के प्रसार की ओर ध्यान दिया। उसकी शिक्षा प्रणाली के तीन सिद्धांत- सम्राट के प्रति भक्ति, ईसाई धर्म में श्रद्धा तथा विश्वविद्यालयों और शिक्षण संस्थानों में अनुकूलन आचरण। वह शिक्षा के कार्य को राज्य का एक प्रमुख कार्य समझता था। उसने राज्य में निम्न प्रकार की शिक्षा संस्थाओं को प्रोत्साहन दिया -
- शिक्षा के राष्ट्रीय एवं धर्मनिरपेक्ष स्वरूप को अपनाया।
- शिक्षा को प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च स्तरों पर संगठित किया। सरकार के द्वारा नियुक्त शिक्षकों की सहायता से चलने वाले इन स्कूलों में एक समान पाठ्यक्रम, एक समान पाठ्य पुस्तकें तथा एक समान वर्दी की व्यवस्था की गयी।
- नेपोलियन ने पेरिस में एक विश्वविद्यालय की स्थापना की जिसमें लेटिन, फ्रेंच, विज्ञान तथा गणित इत्यादि विषयों की शिक्षा दी जाती थी। शिक्षा पर अधिकाधिक सरकारी नियंत्रण रखना तथा विद्यार्थियों को शासन के प्रति निष्ठावान बनाना इसका उद्देश्य था।
- नेपोलियन ने नारी शिक्षा में कोई रुचि नहीं दिखायी। उनकी शिक्षा का भार धार्मिक संस्थानों पर छोड़ दिया गया।

कानून संहिता या नेपोलियन कोड का निर्माण

- क्रांति के पूर्व फ्रांस की कानून व्यवस्था छिन्न-भिन्न थी और इतने प्रकार के कानून थे कि कानून का पालन कराने वालों को भी उनका ज्ञान नहीं था। साथ ही क्रांति के दौरान यह अराजकता काफी बढ़ गई थी। इन्हीं समस्याओं को ध्यान में रखते हुए नेपोलियन ने एक कानून संहिता का निर्माण जिसे 'नेपोलियन कोड' के नाम से भी जाना जाता है।
- 'नेपोलियन कोड' के अंतर्गत उसने परिवार के मुखिया का अधिकार सुदृढ़ किया। साथ ही स्त्रियों को पुरुषों के अधीन रखा गया और पति का कार्य पत्नी की रक्षा करना तय किया गया। तलाक की पद्धति को कठिन बनाया गया। इस कोड में सिविल विवाह की व्यवस्था भी की गई थी। इस प्रकार सिविल विवाह और तलाक की प्रथा को मान्यता देकर नेपोलियन ने यूरोप में इस बात का प्रचलन किया कि बिना पादरियों के सहयोग के भी समाज का काम चल सकता है।
- इसी प्रकार अन्य संहिताएं जैसे-व्यापार संबंधी कानून संहिता, कोड ऑफ़ क्रिमिनल प्रोसीजर आदि बनाए गए। उसके व्यापारिक कोड में श्रमजीवियों के हितों की उपेक्षा की गई थी और उनके संघों पर प्रतिबंध को जारी रखा गया। इस दृष्टि से नेपोलियन ने क्रांति के आदर्शों के विरुद्ध कार्य किया। इसके बावजूद इस विधि संहिता की महत्ता समुचित देश में कानून की एकरूपता प्रदान करने तथा व्यवहारिक रूप से न्याय व्यवस्था को आसान बनाने में थी।

सामाजिक सुधार

- नेपोलियन कोड वस्तुतः सामाजिक समानता पर आधारित था। विशेषाधिकार और सामंती नियम का संहिता में कोई स्थान नहीं था। बड़े पुत्र को संपत्ति का उत्तराधिकारी मानने का कानून भी नहीं था। संपत्ति पर सभी पुत्रों को बराबर का अधिकार दिया गया। नेपोलियन ने समाज में एक नवीन कुलीन वर्ग की स्थापना की।
- उसने सैनिक ढंग पर सामाजिक सेवाओं का संगठन किया और प्रत्येक क्षेत्र में कुछ उपाधियां आदि निश्चित कर दी, जो व्यक्ति इस प्रकार के कार्यों को करते उनको योग्यता के आधार पर उपाधि प्रदान किए जाते थे किंतु उपाधि वितरण पद तथा वृत्तियां जन्मजात नहीं थी और ना इनसे किसी व्यक्ति को विशेष अधिकार ही प्राप्त होते थे।
- इस योजना से देश में राष्ट्रीय भावना दृढ़ हो गई तथा सर्वसाधारण में राज्यसेवा तथा समाज सेवा के भाव उत्पन्न हो गए। जो व्यक्ति देश अथवा समाज के नाम पर अपनी सेवाएं नहीं दे सकते थे वे उपाधि प्राप्त करने की आशा में देश एवं समाज के सेवक बन गए।